हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)
ISSN : 2582-9092

राष्ट्र के पुनरुत्थान में भारतीय ऐतिहासिक साहित्य का योगदान

डॉ. मनीषा दीक्षित

सारांश – इतिहास हमारा बीता हुआ कल था। उसमें कतिपय ऐसे अन्थकारमय पन्ने हैं जिनके खोलने से आत्मग्लानि होती है तो कतिपय ऐसे भी पृष्ठ हैं जिनके अवलोकन से मन गौरवान्वित हो उठता है। काले पन्नों से हम यह सीखते हैं कि हम दुबारा उन गलतियों को न दोहरायें जिससे हमारा भविष्य भी कालिमामय भूतकाल बने। बल्कि हम अपने उस गौरवशाली इतिहास को भी जाने जिसमें देवत्व ही देवत्व के दर्शन होते हैं। स्वयं मानवता की राह में चलते हुए गर्व से जीने तथा औरों को भी जीने देने का पवित्र उद्देश्य समाहित है। भारत वर्ष में अनेकों आक्रान्ताओं ने अपने अपनी हठधर्मिता की हदें पार कर दीं। जिससे हमारा सत्य इतिहास कुछ काल के लिए तिरोहित हो गया था किन्तु आज जब उन पन्नों को पलटा जा रहा है तो सत्य कुछ भिन्न ही दिखाई देता है। यदि समय रहते अपने उस गौरवशाली इतिहास का अधिकाधिक पठन व मनन किया जायेगा तो लिश्चय हर राष्ट्र के विकास में एक नया सबेरा आ सकेगा। आवश्यकता इस बात की है कि हमें सत्य इतिहास की जानकारी होनी चाहिए।

मुख्य शब्द :– राष्ट्र, पुनरुत्थान, ऐतिहासिक साहित्य।

अंग्रेजी सत्ता के समक्ष भारत के इतिहास, धर्म और भाषा को बदलने की योजना को सार्थक बनाने में सबसे बड़ी बाधा यहाँ का अपार ज्ञान से युक्त बड़ी मात्रा में सुलभ ऐतिहासिक साहित्य था। साहित्य के बल पर ही भारतीय बार–बार गिरकर भी सांस्कृतिक पुर्नजागरण की भावना से भरकर पुनः संघर्षरत हो उठते थे। इसमें कोई संदेह भी नहीं है, कि यह विशेषता केवल भारत की ही रही है, कि सदियों तक एक के बाद दूसरे युद्धों में लगे रहने और सैकड़ों वर्षो तक निरन्तर पराधीन बने रहने पर भी वह न केवल अपने प्राचीन साहित्य के महत्व को ही वरन् अपनी पुरातन सस्कृति, सभ्यता, रीति रिवाज, रहन–सहन और धर्म के स्वरूप को भी बहुत कुछ उसी रूप में अक्षुण्ण बनाये रखने में समर्थ रहा है।

साहित्य साधनों में भारत एक अथाह महासागर के भांति है, विश्व के किसी भी देश में आज भी इतना दुलर्भ साहित्य उपलब्ध नहीं है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेंद को कम से कम 10,000 वर्षो पूर्व का स्वीकार किया है। स्वामी विवेकानंद ने वेद को हिन्दुओं का आदि ग्रन्थ माना है। उनका कहना है, कि वेद का अर्थ कोई ग्रन्थ नहीं है, विविध समयों विभिन्न व्यक्तियों द्वारा अविष्कृत आध्यात्मिक नियमों का संचित कोष। उनका विश्वास है, कि पृथ्वी पर ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो वेदों के निर्माण हेतु भर सके। उनके अनुसार पाणिनी व्याकरण पर पूर्ण अधिकार किये बिना वेंदों की भाषा में पारंगत होना असंभव है। वेंद चार अर्थात ऋग्वेंद, यजुर्वेद, सामवेंद तथा अथर्ववेंद । इसके साथ–साथ भारत के प्राचीन इतिहास को जानने हेतु ब्राह्मण, आरण्यक, उपषिद, वेदांग, स्मृतियाँ तथा पुराण है। ब्राह्मण ग्रन्थो में ऐतरेय, कोशित, गोपथ, शतपथ आदि आते है। उपनिषदों की संख्या 108 या इससे भी अधिक मानी है। इसमे ऐतरेय, तैत्तरीय, छन्दोंग्य, वृहदारण्य, केन, प्रश्न, मुण्डक माण्ड्क्य आदि प्रसिद्ध है।

ISSN : 2582-9092

स्वामी विवेकानंद ने उपषिदों को एतिहासिक सामग्री के रूप में महत्व दिया है। उन्होंने स्वयं कहा कि में उपनिषदों के अतिरिक्त कही अन्यत्र से उद्धरण नहीं देता। वेदांग में शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त छंद तथा जोतिष है। इनका वर्णन अनेक ग्रन्थों की रचनाओं में है। इसी तरह स्मृतियाँ जैसे मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य, परासर, नारद, वृहस्पति कत्यायन तथा देवल आदि। अनेक विद्वानों ने पुराणों को भारतीय इतिहास का प्रमुख साधन माना है। यह कहा गया है, कि इस पृथ्वी पर ऐसा कोई नहीं जो इतिहास और पुरूश के सूक्ष्म पाथक्य को पकड़ सके। हिन्दु धर्म के महान प्रयास से पुराणों में लिखित भावों को जनता तक पहुचाँया गया है।

भारतीय ऐतिहासिक प्राचीन साहित्य में रामायण एवं महाभारत विश्व की श्रेष्ठम् रचनायें मानी गई है। इस भांति गीता भी भारत का अमर ऐतिहासिक ग्रंथ है। प्राचीन काल से महाभारत काल तक तीस प्रमुख इतिहासकार हुये। प्रजापति शुक्र, वृहस्पति, सविता, वृत्यु, मधवा, वशिष्ट, सारस्वत, त्रिधासा, त्रिवृक्ष, भारद्वाज, अंतरिस, धोम, वेणुवाजश्रवा, तिराव्य, वेदहाथी, वृति अतरी, गौतम, उत्तमहरयात्मा, सोम, पुष्पायण, तरूणके विन्दों, भागर्व, शक्ति, जातुकरण बाल्मीकि, कृष्ण द्वैपायन, जैमिनी, गर्ग, धंनजय।

उपरोक्त इतिहासकारों में केवल चार के ग्रंथ ही उपलब्ध है इन चार गंथों के इतिहासकारों के नाम बाल्मीकि कृष्ण द्वैपायन, जैमिनी तथा गर्ग है। यद्यपि विद्वानों में कही–कही मत भिन्नता है। यह उल्लेखनीय कि कौटिल्य ने अपने अर्थश्शास्त्र में सन्दर्भ दिये है जिसमें उपरोक्त कई इतिहासकारों के सन्दर्भ भी दिये है इसी तरह महाकवि कालीदास व वाणभट्ट के ग्रंथ तत्कालीन भारतीय इतिहास पर अपूर्व प्रकाश डालते है। कश्मीर के विख्यात इतिहासवेत्ता कल्हण ने राजतरंगिणी में महाभारत युद्ध से पूर्व का विस्तृत वर्णन है।

बौद्ध तथा जैन ग्रंथों में भी अतुलनीय ऐतिहासिकता का प्रमाण प्राप्त होता है। जातक कथायें त्रिपिटक तथा महात्मा बुद्ध पर लिखें अनेक ग्रंथ, महावंश दीपवंश आदि अनेक ग्रंथ तत्कालीन भारत के धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन का दर्शन कराता हैं। वही दक्षिण भारत का संगम साहित्य भारतीय इतितहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है। समय–समय पर भारत में आयें यूनानी, तिब्बती तथा चीनी यात्रियों के वर्णन भी भारतीय इतिहास पर उल्लेखनीय प्रकाश डालते है इसी भांति भारत से बाहर गये विद्वानों, धर्म प्रंचारकों के लेख विदेशों में भारतीय संस्कृति, धर्म के प्रचार का सुन्दर वर्णन है। इतना ही नहीं भारत में अनेक कवि भक्त तथा सन्त भी हुये जिन्होंने अपनी रचनाओं में देश का सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक जीवन को प्रभावित किया जिससे देश में राश्ट्रीय नव चेतना जागृत हुयी। वस्तृतः इस काल में उपजा भक्ति आन्दोंलन, तत्कालीन वीभत्स परिस्थितियों का उत्तर था जो महान राष्ट्रभक्ति के जागरण के रूप में परिवर्तित हुये।

मुस्लिम लेखकों में मुल्ला दाउद ने चन्द्रावत, कुतुबन ने मृगावती, मलन ने मधुमति, जायसी ने पद्मावत ग्रंथ लिखें। रसखान के छन्द तथा अमीर खुसरों की पहेलियों ने भारतीय इतिहास तथा भारतीय

ISSN : 2582-9092

सोच के अनेक रहस्यों को खोला। बाबर ने स्वयं तुजुक–ए–बाबरी या बाबरनामा लिखा। हुमॉयू के बारे में खावन्दमीर गुलवदन बेगम जौहर, शेख वयाजिद तथा मित्रों हैदर ने रचनायें की। अकबर के काल में अबुल फजल, बदायुनी, फैजी सरहिन्दी, अब्बुल बकी तथा मुल्ला दाउद आदि के ऐतिहासिक ग्रंथ उपलब्ध है। जहाँगीर के काल में मुतामिद खॉ, मुहम्मद कासिम फरिस्ता, ख्वाजा कामगर ने ग्रंथ लिखे।

इसी भांति शाहजहाँ तथा औरंगजेब के काल में अब्दुल हमीद लहौरी, इनायत खां, अमीन काजबिनी, मुहम्मद सालिह, खफी खां तथा मिर्जा मुहम्मद काजिल आदि प्रसिद्ध लेखक हुये। दारा शिकोह के नेतृत्व में कई संस्कृत ग्रंथो का फारसी में अनुवाद हुआ। अग्रेज तथा भारतीय इतिहासकारों ने इनमें कुछ के अनुवाद किये। भारतीयों में मनोवैज्ञानिक रूप से हीन भावना पैदा करने एवं भारतीय भावना उनमें विस्मृत करने हेतु अनेक ब्रिटिश इतिहासकारों अधिकांशत तो जान बूझकर और कुछ मात्रा में अज्ञानता और असावधानी के कारण भारत के इतिहास की प्राचीन घटनाओं, नामों और तिथियो को तोड़–मरोड़कर अपनी इच्छा अनुसार प्रस्तुत करके उन्हें अपने मुख्य उद्देश्य की पूर्ति में सहायक बनाया।

कम्पनी सरकार ने अपनी उद्देश्य की प्राप्ति के निमित्त एक बहूमुखी गुप्त योजना बनायी और उसके कार्यान्वयन के व्यापक स्तर पर प्रबंध किये। इस योजना के अर्न्तगत ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में पाश्चात्य विद्वानों और वैज्ञानिकों में, इतिहास के क्षेत्र में पाश्चात्य इतिहासकारों ने, साहित्य के क्षेत्र में पाश्चात्य लेखको और अनुवाद को ने, शिक्षा के क्षेत्र अंग्रेजी शिक्षाश्शास्त्रियों ने, प्रशासन के क्षेत्र में ब्रिटिश प्रशासकों ने तथा सांस्कृतिक और धार्मिक क्षेत्र में ईसाई धर्म प्रचार को ने भारत की प्राचीनता, महानता, व्यापकता अविच्छिन्नता और एकात्मता को ही नहीं समाज में ब्राह्मणों यानी विद्वानों के महत्व और प्रतिष्ठा को नष्ट करने के उद्देश्य से सम्मिलित अभियान चलाया। इस अभियान के अर्न्तगत ही यह भी प्रचारित किया गया कि भारतीय सभ्यता इतनी प्राचीन नहीं हैं जितनी कि वह बतायी जाती है, भारत का पुरातन साहित्य अविश्वासनीय है, रामायण और महाभारत की घटनायें कपोल कल्पित है– इतिहासिक पुरूष है ही नहीं आदि।

सर विलियम जॉन्स भारतीय कालगणना को स्वीकार नहीं करता है। उसने विश्व में प्रचलित ईसाई सिद्धान्त स्वीकार किया कि सृष्टि 4004 वर्ष ई. पूर्व प्रारम्भ हुई तथा भारत का इतिहास 1300 वर्ष ई. पूर्व में सीमित रखा गया। सेण्ड्रोकोटस को चन्द्रगुप्त मौर्य बताया तो उसके सैल्यूकस से आक्रमण करने की बात कही। लेकिन इसके कोई तर्क नहीं दिये गये पुराणों में चन्द्रगुप्त मौर्य का काल 1500 ई. पूर्व बताया गया जबकि जोन्स ने 312 ई. पूर्व माना है। जोन्स मिल ने अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया' में लिखा की भारत में हिन्दु मुस्लिम विजय से पूर्व इतिहास के बारे में अज्ञानी एवं हिन्दू ऐतिहासिक साधनों का पूर्णतः अभाव है। लार्ड मैकाले ने भारतीय इतिहास को बेहूदा इतिहास बताया। लुई डिकिन्सन ने भ्रामक प्रचार किया कि कोई हिन्दु इतिहासकार है ही नहीं।

ISSN : 2582-9092

निष्कर्ष :–

उपरोक्त साहित्य साधनों के बल पर ही भारत के अनेक विद्वानों ने अंग्रेज तथा यूरोपियन विद्वानों के भ्रामक कुप्रचार का खण्डन किया। 19 वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्वामी विवेकानंद तथा उनकी शिष्या भगिनी निवेदिता ने अपने भाषणों, लेखों तथा ग्रंथों में इस कपोल कल्पित प्रचार की तीव्र भर्त्सना की एवं कठोर शब्दों में आलोचना की तथा उनकी धारणाओं का भण्डाफोड किया।

संदर्भ सूची :–

1. रघुनन्दन प्रसाद शर्मा, भारत के इतिहास में विकृतियां क्यों कैसे और क्या, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नयी दिल्ली, पृ. 25
2. स्वामी विवेकानंद, विवेकानंद साहित्य भाग 9 कोलकाता 1989, पृ. 63
3. भगिनी निवेदिता, फूटफाल्स ऑफ इंडियन हिस्ट्री (मूलतः 1915 लन्दन 1932 संस्कृरण), पृ. 1,2,7,8
4. वही भाग 1, भगिनी निवेदिता की भूमिका हमारे गुरू और उनका संदेश, पृ. 332
5. वही भाग 1, पृ. 132
6. वही भाग 8, पृ. 133
7. वही भाग 6, पृ. 159
8. वही भाग 7, पृ. 132–138
9. भारतीय इतिहास शास्त्र एवं कालक्रम, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योतना दिल्ली पृ. 19
10. एल.एन. रंगराजन, कॉटिल्य का अर्थशास्त्र (पेगुइन 1992) पृ. 4
11. डॉ. शरद हेवालकर, कृण्वन्तों विश्वमार्यम, नयी दिल्ली 2010
12. सतीशचन्द्र मित्तल, भारत में राष्ट्रीयता का स्वरूप, नयी दिल्ली पृ. 134–137
13. एलियट एण्ड डाउनसन, सम्पादित द हिस्ट्री ऑफ इंडिया ऐज टोल्ड बाई इट्स ओन हिस्टोरियन्स, द मुहम्मद पीरियड, मूलतः प्रकाशित 1867–1868
14. रघुनन्दन प्रसाद शर्मा, भारत का आधुनिक इतिहास लेखन एक प्रवंचना, बाबा साहब आप्टे स्मारक समिति दिल्ली, पृ. 32–33
15. रघुनन्दन प्रसाद शर्मा, वही,

ISSN : 2582-9092

16. एस.एन. मुकर्जी, सीटीजन हिस्टोरियन्स एक्सपोलोरेशन्स इन हिस्टोरियाग्रफी (कोलकाता द्वितीय संस्करण 2002) पृ. 100

17. जेम्स मिल, हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया, भाग एक पृ. 117,133,170; एस. सी. मित्तल इंडिया, डिस्टोरटेड; स्टॅडी ऑफ ब्रिटिश हिस्टोरियन्स आन इंडिया, भाग 1, चण्डीगढ़ पृ. 17–36

18. थॉमस पिन्न, द लैटर्स ऑफ टी.वी. मैकाले, भाग तीन पृ. 16–47; जी. ओ. ट्रैर्लिवियन, लाइफ एण्ड लैटर्स ऑफ मैकाले भाग दो पृ. 291

19. लुई डिकिन्सन, एन एस्से आन द सीविलाइजेशन ऑफ इंडिया, चायना एण्ड जापान पृ. 15

20. सिस्टर निवेदिता, फुटफाल्स ऑफ इंडियन हिस्ट्री (मूलतः 1915, लन्दन 1932 संस्करण) पृ. 6–25, 176, 186.

सहायक प्राध्यापक–इतिहास विभाग
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, मध्य प्रदेश